कण-कण में भगवान

मित्रों किसी भी कार्य को पूरा करने में विश्वास का अहम Role होता है। अगर आप किसी भी Subject को पुरे विश्वास के साथ पढ़ेंगे तो आप वह Subject पूरी तरह से समझ लेंगे।

किसी भी कार्य को करने के पहले आप विश्वास रखें कि आप यह कार्य अवश्य कर लेंगे, जब दूसरे वही कार्य कर सकते हैं, तो आप क्यों नहीं कर सकते ? आज की कहानी इसी पर आधारित है।

आप बिना सोचे - विचारे ही किसी को भी रैकेट से मार देते हैं। क्या तुम्हे पता है इससे किसी को चोट भी लग सकती है और यह रैकेट भी टूट सकता है ?

बात पूरी होने से पहले ही " लेकिन यह तो सिर्फ़ टेढ़ा ही हुआ है, बिल्कुल तुम्हारी तरह जैसे तुम बिना किसी बात को समझे झट से टेढ़े हो जाते हो.". पिंटू की छोटी बहन ने कहा।

यह उपरोक्त बातें धर्मा और पिंटू के बीच चल रही थी कि बीच में रानी जो कि पिंटू की छोटी बहन है भी इस वार्तालाप में कूद पड़ी. धर्मा भाई ठीक ही तो कह रहें हैं तुम हमेशा ही थोड़ी-थोड़ी बात पर टेढ़े हो जाते हो.

इसके पहले कि धर्मा कुछ जवाब देता, पिंटू ने अपनी छोटी बहन को रैकेट से एक रैकेट मार दिया और वह भागने की तैयारी में ही था कि धर्मा और रानी ने मिलकर उसे पकड़ लिया और रैकेट छीनने की कोशिश करने लगे, रानी गुस्से में चिल्ला भी रही थी कि मैं आज इस रैकेट को ही तोड़ दूँगी...जब देखो सबको रैकेट से मारता रहता है.

आखिर में धर्मा के सहयोग से रानी पिंटू से रैकेट छीनने में सफल रही और वो रैकेट को तोड़ने लगी. उसने पूरी कोशिश की लेकिन रैकेट नहीं टूट रहा था, रैकेट को तोड़ने की कोशिश में रानी के हाथों में घाव जरूर हो गया था.

इस कोशिश में रैकेट काफी टेढ़ा हो गया ....इस पर रानी गुस्से और चिड़चिड़ेपन के मिश्रित भाव से धर्मा से बोली...अरे यह रैकेट तो टूट ही नहीं रहा है.

इस पर पिंटू जोर-जोर से हंसने लगा और हंसते हुए बोला...यह रैकेट नहीं टूट सकता...यह मेरा दोस्त है. इस पर रानी ने चिढ़ कर उस रैकेट को वही ज़ोर से फेक दिया.